

हिन्दी

अध्याय-14: लोकगीत



मनोरंजन की दुनिया में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गीत संगीत के बिना हमारा मन नीरस हो जाता है। हमारी जीवन में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। लोकगीत अपनी ताजगी और लोकप्रियता से शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। ये सीधे जनता का संगीत हैं। ये गाँव जनता का संगीत है। इसके लिए प्रत्येक साधना की जरूरत नहीं है। त्योहारों, और विशेष अवसरों पर ये गीत गाये जाते हैं। ये गीत बाजों, ढोलक, करताल, बाँसुरी, आदि की मदद से गाये जाते हैं।

लोकगीत कई प्रकार के होते हैं। इनका एक एक प्रकार बहुत सजीव है। यह इस देश का आदिवासियों का संगीत है। पूरे देश भर ये फैले हुए हैं। अलग अलग राज्यों में, अलग-अलग भाषाओं में रंगी रंगी फूलों की माला की तरह ये बने हैं। सभी लोकगीत गाँवों की बोलियों में गाये जाते हैं। चैता, कजरी, बारहमास, सावन आदि उत्तरप्रदेश और बनारस में गाये जाते हैं। बोउल, भटियाली, बंगला के लोकगीत हैं। राजस्थान में ढोलामारू, भोजपुर में बिदेशियाँ प्रसिद्ध हैं। एक दूसरों को जवाब के रूप में दल में बाँटके भी ये गीत गाये जा सकते हैं। गाने के साथ नाचना भी होता है।